गृह-विज्ञान शिक्षण का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

Historical Background of Home Sc.

Ans. अमेरीकी वैज्ञानिक बेंजामिन थॉमसन ने वर्ष 1790 में सर्वप्रथम रसोई में विज्ञान का प्रयोग किया। इस हेतु उन्होंने सूई से ले कर रसोई में उपयोग होनेवाले सभी बर्तनों एवं अन्य उपकरणों का आविष्कार किया तथा विज्ञान को रसोई से जोड़ने का प्रयास किया। आगे चलकर गृह विज्ञान के क्षेत्र में कार्य कर रहे गृह वैज्ञानिक E. Beacher, Catherin ने वर्ष 1840 में गृह विज्ञान विषय को विज्ञान के समान विद्यालय में पढ़ाये जाने की आवश्यकता पर जोड़ दिए। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में Ellen H. Richards ने गृह विज्ञान की शाखा "गृह अर्थशास्त्र" की शिक्षा पर विशेष बल देने का प्रयास किया। उन्होंने गृह-विज्ञान शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु अनेक प्रयत्न किए। इसी संदर्भ में भोजन की पौष्टिकता की जानकारी हेतु शिकागो में "रम्फोर्ड सोसाइटी" की व्यवस्था की गई।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में यूरोप के कुछ देशों खासकर इंग्लैंड और फ्रांस में भी गृह विज्ञान शिक्षण को महत्व दिया जाने लगा। इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई। इन देशों में गृह-विज्ञान को एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थान दिया गया। औपचारिक तौर पर पाठ्यक्रम में इस विषय को सम्मिलित किया गया।

भारत में वुड के घोषणा पत्र एवं हण्टर कमीशन की सिफारिशों के बाद बालिका शिक्षा पर जोर दिया गया। नारी उत्थान हेतु बालिका शिक्षा आवश्यक समझा गया तथा बालिकाओं के लिए अलग विद्यालयों की स्थापना की गई। भारत में गृह विज्ञान का शिक्षण सर्वप्रथम

Scanned with CamScanner

पंजाब प्रांत में प्रारंभ हुआ। इस विषय को वर्ष 1936 में मिडिल स्तर के विद्यालयों बालिकाओं के लिए अनिवार्य कर दिया गया। इसके बाद मैट्रीकुलेशन परीक्षा हेतु इसे ऐच्छिक विषय के रूप में स्थान दिया गया।

भारत में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन वर्ष 1932 के प्रयास से अपनी किस्म की पहली संस्था "लेडी इरविन कॉलेज" की स्थापना दिल्ली में की गई। यहाँ इस विषय को एक व्यापक विज्ञान एवं कला का रूप दिया गया। प्रारंभ में यहाँ गृह-विज्ञान विषय में डिप्लोमा और सर्टीफिकेट दी जाती थी, परंतु बाद में बी.एस-सी की उपाधि भी दी जाने लगी। गृह विज्ञान को विज्ञान के साथ-साथ कृषि विज्ञान का भी अंग माना जाने लगा। धीरे-धीरे इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया।

आगे चलकर गृह-विज्ञान शिक्षा की महत्ता को समझते हुए भारत के प्रायः सभी राज्यों में इस विषय को पाठ्यक्रम का अंग बना दिया गया। आज देश में गृह विज्ञान विषय की उच्च स्तरीय शिक्षा हेतु देश के कई भागों में विशिष्ट संस्थानों की स्थापना की गई। इनमें कुछ प्रमुख संस्थान इस प्रकार है— होम साइन्स इन्सटीट्यूट लड़वा, होम साइन्स महाविद्यालय जबलपुर, गवर्नमेन्ट होम साइन्स महाविद्यालय इलाहाबाद, आगरा, चण्डीगढ़ आदि।

गृह विज्ञान का क्षेत्र -

गृह विज्ञान का क्षेत्र असीमित है। इसकी अनिवार्यता शिक्षा में इसकी व्यापकता के के आधार पर ही निश्चित की गई। फिर भी

Scanned with CamScanner

गृह विज्ञान के कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्न है-

1. आहार एवं पोषण- इसका सीधा संबंध हमारे शारीरिक वृद्धि एवं विकास से है। आहार एवं पोषण विज्ञान की शिक्षा से आहार में उपस्थित पौष्टिक तत्वों की जानकारी प्राप्त होती है तथा इन पौष्टिक तत्वों का हमारे जीवन में क्या महत्व है यह भी जान पाते है।

2. शरीर विज्ञान तथा स्वास्थ्य विज्ञान

इस विज्ञान के अंतर्गत शरीर के विभिन्न अंगों की जानकारी हासिल की जाती है तथा इन्हें किस प्रकार स्वस्थ रखा जाए।

3. शिशु पालन

बालक के जन्म से पूर्व गर्भावस्था से लेकर जन्म के बाद तथा बड़े होने तक शिशु की पालन-पोषण किस प्रकार की जाय ताकि वह आगे चलकर समाज का एक अच्छा नागरिक बन सके। शिशु पालन की सही ज्ञान न रहने से बच्चा अस्वस्थ, कमजोर तथा रोगग्रस्त हो जाते है।

4. प्रारम्भिक चिकित्सा तथा गृह-परिचर्या

गृह विज्ञान शिक्षा के अंतर्गत प्रारम्भिक चिकित्सा तथा गृह-परिचर्या भी संलग्न है। रोगी की प्रारंभिक चिकित्सा किस प्रकार किया जाय इसकी समुचित जानकारी इस विषय के द्वारा दी जाती है।

Scanned with CamScanner

गृह व्यवस्था

गृह-व्यवस्था गृह विज्ञान की वह शाखा है, जिसके अंतर्गत घर की साफ-सफाई से लेकर इसकी साज-सज्जा, उपकरणों की रख-रखाव तथा गृह बजट आदि की शिक्षा दी जाती है।

पाक-कला

सामान्यतौर पर पाक-कला का अर्थ भोजन बनाने से ली जाती है, किन्तु गृह विज्ञान में इसका विशेष महत्व है। भोजन बनाना कोई विशेष महत्व की बात नहीं है, परंतु भोजन किस प्रकार बनाया जाए कि इसकी गुणवत्ता बनी रहे तथा भोजन स्वादिष्ट भी हो। भोजन का अस्वीकार होना पाक-कला की अधूरी शिक्षा को दर्शाता है। अतः पाक-कला गृह विज्ञान की एक शाखा है।

वस्त्रों की कटाई, बुनाई, सिलाई तथा धुलाई

इस शाखा के अंतर्गत रेशों की पहचान से लेकर वस्त्र निर्माण, उसकी कटाई, बुनाई, सिलाई तथा धुलाई तक की शिक्षा दी जाती है। वस्त्रों पर लगे दाग-धब्बे तथा गंदगियों को दूर करने के लिए किन चीजों का उपयोग करना चाहिए इसकी शिक्षा भी इसी शाखा के अंतर्गत दी जाती है।

Scanned with CamScanner